ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

खंड-VII अंक-VIII

नवम्बर, 2015

इस अंक में:

- इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फैर (आईआईटीएफ़)-2015 में कृषि उद्यमियों की भागीदारी
- इस माह का संस्थान: श्री. धन प्रकाश शर्मा, शामली, उत्तर प्रदेश
- इस माह का संस्थान: एसआरआईएसटीआई फ़ाउंडेशन, पटना, बिहार

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

नई दिल्ली में इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फैर (आईआईटीएफ़)-2015 में कृषि उद्यमियों की भागीदारी

इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गनाइज़ेशन (आईटीपीओ) द्वारा नवम्बर 14-17, 2015 तक प्रगति मैदान, नई दिल्ली में इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फैर (2015) का 35वां संस्करण आयोजित किया गया। भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री.प्रणब मुखर्जी ने नवम्बर 14, 2015 को कार्यक्रम का उद्घाटन किया तत पश्चात वाणिज्य और उद्योग मंत्री, श्रीमती निर्मला सीतारमन ने समारोह की अध्यक्षता की। 28 विभिन्न देशों से लगभग 7,000 देशी और विदेशी फ़र्म ने इस आयोजन में भाग लिया। इस वर्ष के समारोह के लिए 'मेक इन इंडिया' विषय चुना गया था। यह विषय एसी एवं एबीसी योजना के उद्देश्यों का अच्छा पूरक बना। मैनेज ने एसी एवं एबीसी योजना के अंतर्गत प्रशिक्षित 10 कृषि उद्यमियों को इसमे भाग लेने हेतु मदद की। श्री. उदय सिंह राणा, कर्नल, हरयाणा, डॉ. बेंहुर, चेन्नई, तमिलनाडु, श्री.अविनाश सालूङ्खे, पुणे, महाराष्ट्र, श्री.जगदीश धनानी, अहमदाबाद, गुजरात,

कृषि उद्यमियों से बात करते हुये श्री. राधा मोहन सिंह, कृषि मंत्री, भारत सरकार

श्री. रामचन्द्र अप्पारे, हैदराबाद, तेलंगाना, श्री. क्षरवनन, एरोड़, तमिलनाडु, श्री. आणंदने, पॉण्डिचेरी, श्री. करुप्पियाह, मदुरै, तमिलनाडु', डॉ. कब्या बोरा, गुवाहाटी, असम और सुश्री. अनीता ढोबले, सोलापुर, महाराष्ट्र वह उम्मीदवार थे जिन्होंने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इन 14 दिनों में देश के विभिन्न भागों और वर्गों से कम-से-कम 15,000 लोगों ने इन स्टालों का दौरा किया। आगंतुकों ने न केवल वहाँ प्रदर्शित उत्पादों में दिलचस्पी दिखाई बल्कि कृषि उद्यमियों और उनकी गतिविधियों में भी दिलचस्पी दिखाई। इस प्रदर्शिनी के परिणामस्वरूप कृषि उद्यमियों द्वारा किए गए लेन-देन और व्यापारिक सौदे

- कर्नल के श्री. उदय सिंह राणा ने दिल्ली के एक खुदरा व्यापारी के साथ 8 लाख रुपए प्रति माह के मूल्य के शहद की आपूर्ति हेतु व्यापारिक सौदा तय किया।
- एरोड़ के श्री. श्रवनन ने केरला के एक व्यक्ति के साथ 1 लाख रुपए मूल्य का 10 टन जैव खाद की आपूर्ति के लिए करार नामा बनाया है।
- वडाला की सुश्री. अनीता ढोबले ने अगले 3 महीनों के लिए 10 लाख मूल्य के ऊतक संवर्धित पौधों की आपूर्ति से संबन्धित एक व्यावसायिक सौदा पक्का किया है।
- गांधीनगर के श्री. जगदीश धनानी ने रु.27 मूल्य की 273 विडियो सीडी बेची, मेले में 300, और उनसे विभिन्न स्थानों से लोग लगातार इस संदर्भ में पूछताछ कर रहे हैं।
- मदुरै के श्री.करूपीयह से 5 औषधीय पौधों की आपूर्ति के लिए पूछताछ की गयी और उन्होंने मध्यम स्तर की कंपनियों को नमूने भेजे। नाशिक के एक विक्रेता ने प्याज़ और आलू की खरीदी और बिक्री के लिए साथ में काम करने की इच्छा जताई। उन्हें रु.98 लाख मूल्य का 10 टन कालीमिर्च की आपूर्ति का ऑर्डर भी प्राप्त हुआ।

एक अंतर के साथ कृषि-शुरुआत

शामिली, यूपी के श्री.धन प्रकाश शर्मा (46) नयी पीढ़ी के भिन्न विचार वाले कृषक है। कृषि में स्नातक के पश्चात, उनके साथी जो सरकारी और अन्य संगठित क्षेत्रों में नौकरी ढूंढते है उनकी तरह न सोच कर धन प्रकाश शर्मा ने कृषि को अपना व्यवसाय चुना। बुलबुलाते उत्साह और स्नातक से मिले ज्ञान के साथ वें कृषि के क्षेत्र में परिवर्तनकारी बदलाव लाना चाहते थे। उनका कहना है कि, "मैंने उच्च उत्पादन वाली नई किस्म की फसलें लाई, कम दूध देने वाली किस्म की गाय के बदले संकर और अधिक उत्पादन वाली गाय रखी, वुस्तुओं के बाज़ार और मूल्यों के साथ लगातार संपर्क रखा और पहले से की जा रही खेती के तरीकों में पूर्ण बदलाव लाया"। वें गर्व से कहते है कि, "इस तरह संगठित करने के कारण मैं निवेश के मूल्य को कम कर सका, मुझे मेरे उत्पादों के लिए अच्छा मूल्य प्राप्त हुआ और मेरा मुनाफा और आय का स्तर भी बढ़ा सका"। हालांकि, धन प्रकाश संतुष्ट नहीं थे और कृषि के क्षेत्र में अधिक फैलाव और विविधता लाना चाहते थे। वें कृषि उद्यमी बनाना चाहते थे। इस कोशिश में उन्होंने ऐग्री-क्लीनिक एवं ऐग्री-बिज़नस केंद्र योजना के अंतर्गत कृषि एवं ग्रामीण विकास केंद्र (सीएआरडी), मुज्जफर्नगर द्वारा आयोजित की जा रही 2 माह के आवासीय कार्यक्रम में भाग लिया।

कृषकों के साथ बात करते हुये श्री.धन प्रकाश

पशुपति नेप सैक स्प्रेयर की विशिष्टता

टैंक	- गुंजाइश 16 लिटर
एचडीपीई प्लास्टिक से बना हुआ	
स्केल्ट	- लोहा/प्लास्टिक
प्रैशर चंबर	- पीतल/प्लास्टिक
हैंडल सेट	- आइरन बार
डेलीवेरी सेट	- पीवीसी पाइप की लंबाई-110 सी.मी.
ट्रिग्गर	- पीतल
लेन्स	- स्टील/पीतल
बेल्ट	- कॉटन/नाइलॉन
स्प्रेयर नोज्जल	- एनएमडी/एनटीएम
पानी का निर्वहन दर	- 650 मी.ली. प्रति लिटर

पशुपति नेप सैक स्प्रेयर

उनका कहना है कि, "इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने मुझे कई मायनों में मदद की; इसने मेरे दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तन लाया, उन संबन्धित व्यक्तियों का धन्यवाद जिन्होंने अपने व्याख्यान के दौरान गुणवत्ता की जानकारी साझा की, मेरा संचार कौशल को सुधारा, विपणन और व्यापार संबंध बनाने की परख मिली और मुझे सब्सिडी वाले बैंक ऋण प्राप्त करने के लिए अवसर प्रदान किया। फिर उन्होंने कम मूल्य के खेती की मशीने बनाने की सुविधा के लिए "पशुपति ऐग्रोटेक" नाम से फ़र्म पंजीकृत करवाया और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, शामिली शाखा, यू.पी से रु.21.5 लाख का ऋण प्राप्त किया। आरंभ में, उन्होंने नेप सैक स्प्रेयर का निर्माण शुरू किया। नेप सैक स्प्रेयर छोटे कृषकों द्वारा उनके खेतों में रसायन के छिड़काव के लिए हमेशा से ही मुख्य उपकरण रहा है। तीन महीनों में ही, धन प्रकाश ने नेप सैक स्प्रेयर की बिक्री से रु.5.50 लाख का कुल मुनाफा कमाया।

धन प्रकाश का कहना है कि, "मेरा लक्ष्य है बैटरी से संचालित स्प्रेयर की पुनर्रचना और निर्माण करना साथ ही छोटे, कम लागत के ऊर्जा से युक्त मशीने जैसे सोलर ड्रायर, बीज वपित्र, बहू प्रयोजक दरांतियाँ, रोपक आदि विकसित करना। इसके अलावा, श्री. धन प्रकाश दो जिलों के 250 से अधिक कृषकों को सटीक खेती पर परामर्श सेवाएँ भी प्रदान करते हैं। 6 कुशल कामगार उनके अधीन कार्य कर रहे हैं। उभरते कृषि उद्यमियों के लिए उनका यह संदेश है, "कृषि विकास के लिए सर्वोत्कृष्ट और विशाल क्षमता प्रदान करती है; इतनी विविधता के साथ यह आरंभ करने और विस्तारण के लिए उत्कृष्ट गुंजाइश प्रदान करती है।

श्री. धन प्रकाश शर्मा

पशुपति ऐग्री टेक, सभी तरह के कृषि स्प्रेयर के निर्माता, 498-कंबूज कॉलोनी, शामली-24776, उत्तर प्रदेश

मोबाइल: 07055002000, 0886802000

श्री. अशोक कुमार ठाकुर
नोडल अधिकारी

एनटीआई का नाम : एसआरआईएसटीआई फ़ाउंडेशन

पता : रेशमी कॉम्प्लेक्स (दैनिक जागरण के ऊपर), 8 वां तल, किदवईपुरी, पटना-800001, बिहार, फोन: 0612-2530166

मोबाइल सं.: 9431072233

ईमेल: sris-ti_foundation@rediffmail.com

वेबसाइट: www.ssiast.com

प्रशिक्षण की सं.: 41

प्रशिक्षित अभ्यर्थियों की सं.: 1416

स्थापित वेंचरों की सं.: 558

सफलता का दर: 39.40%

स्थापित ऐग्रीवेंचर: ऐग्री-क्लीनिक, डेयरी एकक, मुर्गी पालन, केंचुआ-खाद उत्पादन एकक, मछली बीज उत्पादन एकक, ऐग्री-बिज़नस केंद्र, मधुमक्खी पालन, मृदा परीक्षण प्रयोगशाला, पुष्पकृषि, मत्स्यपालन, कस्टम हाइरिंग केंद्र मूल्य संवर्धन

क्रियामूलक ज्ञान -काम करके हुये कौशल सीखना : एसआरआईएसटीआई का तरीका

ऐग्री क्लीनिक्स-ऐग्री बिज़नस केंद्र योजना, राज्यों द्वारा "सपोर्ट टू स्टेट एक्सटैन्शन प्रोग्राम फॉर एक्सटैन्शन रिफ़ार्म" योजना के तहत बनाई गयी कृषि तकनीक प्रबंध एजेंसियाँ (एटीएमए) से जुड़े हुये है। विस्तारण रिफ़ार्म योजना के तहत विस्तारण गतिविधियों के संसाधन का न्यूनतम 10% गेर-सरकारी क्षेत्रों से उपयोग होना है। एसआरआईएसटीआई फ़ाउंडेशन एक एनजीओ है और कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद, द्वारा कार्यान्वित एसी एवं एबीसी योजना के अंतर्गत प्रमाणित नोडल प्रशिक्षण संस्थान है। एक एनटीआई होने के कारण, यह फ़ाउंडेशन प्रखर प्रशिक्षण और उनके ऐग्री-क्लीनिक एवं ऐग्री-बिज़नस उद्यम स्थापित करने हेतु हैंड-होल्डिंग समर्थन सुविधाएं प्रदान करते हुये कृषि उद्यमियों को तैयार करता है। एसआरआईएसटीआई फ़ाउंडेशन एटीएमए के साथ मिल कर उभरते कृषि उद्यमियों को तकनीकी कौशल प्रदान करने के लक्ष्य से ऑन-फार्म प्रशिक्षण देने के लिए सक्रिय रूप से भी कार्य करता है। कुकुरमुत्ता उत्पादन, केंचुआ खाद उत्पादन,

कुकुरमुत्ता के उत्पादन पर ऑन-फार्म प्रशिक्षण

औषधीय एवं सुगंधित पौधों के उत्पादन, पुष्पकृषि, मत्स्यपालन, आदि जैसे क्षेत्रों में लगभग 30 ऑन-फार्म प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए है। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं को पद्धतियों के पैकेज पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, संबन्धित क्षेत्र में अवसर और उसके महत्व के बारे में बताया जाता है उसके पश्चात पद्धति का प्रदर्शन दिया जाता है। प्रशिक्षण के पश्चात, कृषि उद्यमियों के लिए इन में से किसी भी गतिविधियों में वेंचर स्थापित करना आसान हो जाता है। यह परंपरा 2013 से प्रचलन में है।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, श्री. राधा मोहन सिंह, हिमाचल प्रदेश सरकार के अपर मुख्य सचिव, श्री. संजीव गुप्ता, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के संयुक्त सचिव (आईटी एवं विस्तारण), श्री. नरेंद्र भूषण, आईसीएआर के महानिदेशक, डॉ.अय्यप्पन, विस्तारण निदेशक (डीओई), डॉ. राधा कृष्ण त्रिपाठी और कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी और अन्य विभाग के भी अधिकारी कुछ मुख्य आगंतुक में से थे जिन्होंने कृषि उद्यमियों के स्टॉल का दौरा किया और उनसे वार्तालाप किया। आगंतुक पुस्तिका में की गयी प्रविष्टि में श्री. संजीव गुप्ता ने कहा कि, "पौध स्थानांतरण गतिविधि देख कर मैं आश्चर्यचकित हूँ। एक कृषि उद्यमी द्वारा अपनायी गयी यह नवीन गतिविधि है और कहा "बहुत ही अभिनव प्रयास, इसे लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता है ताकि ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग इसका प्रयोग शुरू कर सके। शुभकमनाएं"।

क्रमशः कृषिउद्यमी सुश्री.अनीता ढोबले, श्री.अविनाश सालूङ्खे, डॉ.काब्या ज्योति के विचार-विमर्श करते हुये कृषि मंत्री श्री.राधा मोहन सिंह

कृषकों से वार्तालाप करते हुये कृषि उद्यमी

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है। यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबन्धित योजनाओं के ब्यौरों से संबन्धित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों, के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

AGRICLINICS & AGRIBUSINESS CENTRES
BETTER FARMING BY EVERY FARMER

"कृषि उद्यमी" श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
कृषि-उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंधन संस्थान (मैनेज),
राजेंद्रनगर, हैदराबाद -500 030, भारत
ई-मेल: agripreneur@manage.gov.in

मुख्य संपादक : श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, संपादक : डॉ.पी. चन्द्रशेखर ,सहायक संपादक: डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमति ज्योति सहारे,
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली